पुरोवाक्

मनुष्य प्रकृति का एक हिस्सा है। 'मनुष्य' कहते वक्त स्त्री, पुरुष, किन्नर सभी आ जाते हैं। इस दुनिया में 'मनुष्य' का समान अधिकार है। पर समय के किसी मोड़ पर पुरुष का वर्चस्व छाने लगा। यह वर्चस्व इतना व्यापक हो गया कि स्त्री का जीना दूभर हो गया। ऐसे समय में स्त्री अपने लिए जगह बनाने की कोशिश करने लगी। इसके लिए पूरी दुनिया में मानव अधिकार केलिए आंदोलन चलाए जाने लगे। इसमें नारीवादी आंदोलन तीव्र बनता गया। अनेक प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद स्त्री डटी रही और अपने हक केलिए संघर्ष करती रही। धीरे-धीरे वातावरण बदलने लगा। इसकी लहर भारत में भी उमड़ पड़ी। विदेश के समान भारत की स्त्री की स्थिति में भी परिवर्तन होने लगा। मानवाधिकार के लिए आवाज़ उठाने लगी।

नारीवादी आंदोलन की धारा को और तेज़ करने में साहित्य की ओर से भी श्रम होने लगा। इसका सैद्धांतिक रूप स्त्री विमर्श के रूप में साहित्य में व्यापक होने लगा। समाज की मानसिकता को बदलने केलिए स्त्री विमर्श ज़रूरी था। कविता, उपन्यास, कहानी जैसी विधाएँ स्त्री विमर्श को आधार बनाकर लिखी जाने लगीं। नाटक तो एक ऐसी विधा है जिसके दो पहलू होते हैं और इसके द्वारा नाटक सभी वर्ग व वर्ण के लोगों को एक साथ प्रभावित कर सकता है। नाटक पाठ और रंगमंच दोनों के ज़रिए उपेक्षित-उत्पीड़ित स्त्री को जागृत करने लगा। नाट्य लेखन चुनौतीपूर्ण काम होने के कारण इस क्षेत्र में स्त्रियों का आगमन देर से हुआ। पर उनके आगमन के साथ स्त्री विषय और सच्चाई के साथ पेश किया जाने लगा।

मोहन राकेश के समय में शारदा मिश्र जैसी स्त्रियाँ स्त्री-मुक्ति को लक्ष्य बनाकर नाट्यलेखन करने लगीं। इस परंपरा को आगे बढ़ानेवाली हैं- कंचनलता सब्बरवाल, विमला रैना, मन्नू भण्डारी, मृदुला गर्ग, कुसुम कुमार, शांति मेहेरोत्रा, त्रिपुरारी शर्मा, गिरीश रस्तोगी, मैत्रेयी पुष्पा, उषा गांगुली, मीरा कांत, विभा रानी, नादिरा ज़हीर

बब्बर, कल्पना मांगलिक, रमा पाण्डेय आदि ने स्त्री विमर्श की स्याही से नाट्य रचना की। इस शोध का उद्देश्य, स्त्री की अस्मिता को कायम रखने की महिला नाटककारों की कोशिश को प्रकाश में लाना है। इसलिए मैंने अपने शोध विषय के रूप में रखा है- **"स्त्री विमर्श के संदर्भ में हिन्दी स्त्री नाट्य लेखन"।**

अध्ययन की सुविधा केलिए मैंने विषय को पाँच अध्यायों में विभक्त किया है। अंत में उपसंहार है।

प्रस्तुत शोध का पहला अध्याय **"स्त्री विमर्श: एक विश्लेषण"** है। इसकी शुरुआत स्त्री विमर्श की पृष्ठभूमि से हुई है। महिला मानवाधिकार के लिए किए गये प्रयास को भी प्रस्तुत किया गया है। भारत में स्त्री विमर्श की लहर उठने के कारण की खोज की गई है। नारीवादी आंदोलन से लेकर स्त्री विमर्श तक के रास्ते को विस्तार दिया गया है।

दूसरा अध्याय **"हिन्दी नाटकों में स्त्री चेतना"** है। प्रस्तुत अध्याय में उन हिन्दी नाटकों का उल्लेख किया गया है जिनमें स्त्री मुख्य विषय के रूप में प्रस्तुत है। इस अध्याय में स्त्री और पुरुष नाटककारों के नाटकों पर प्रकाश डाला गया है। इन दोनों द्वारा स्त्री को प्रस्तुत करने के ढंग पर भी विचार किया गया है।

तीसरा अध्याय है **"स्त्री शोषण-स्त्री नाट्य लेखन के सन्दर्भ में"**। माँ की कोख से लेकर स्त्री की अंतिम साँस तक परिवार तथा समाज के विभिन्न क्षेत्र में उसका शोषण करने केलिए हज़ारों हाथ आगे बढ़ते हैं। स्त्री के सभी शोषित रूपों पर विस्तार से विचार किया गया है।

चौथा अध्याय **"स्वत्वबोध की पहचान और प्रतिरोध के विभिन्न आयाम-स्त्री नाट्य लेखन के संदर्भ में"** है। स्त्री का कई तरह से शोषण होता है। इस अध्याय में महिला नाटककारों के नाटकों में स्त्री के द्वारा शोषण के प्रति किए जानेवाले प्रतिरोध के

सभी आयामों को शब्दबद्ध किया गया है। दरअसल इसमें स्वत्वबोध से युक्त नारी पात्र का अध्ययन हुआ है।

पाँचवाँ अध्याय **"स्त्री नाट्य लेखन की शैल्पिक संरचना"** है। एक विषय को प्रस्तुत करने का ढंग बहुत अधिक महत्व रखता है। नाटक के संदर्भ में तो इसका महत्व और अधिक बढ़ जाता है। स्त्री विमर्श के संदर्भ में रखकर देखें तो महिला नाटककारों के नाटकों में प्रयुक्त भाषा, संवाद और प्रस्तुति आदि सभी में विशिष्टता है। इस अध्याय में इन बातों का अध्ययन हुआ है।

अंत में **"उपसंहार"** है। इसमें पूरे अध्ययन का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध कोच्चिन विश्वविद्यालय की आदरणीय प्रो(डॉ)अजिता जी के निदेशन एवं निरीक्षण में संपन्न हुआ है। उन्होंने समय-समय पर मेरी गलतियों एवं कमियों को सुधारने का दायित्व निभाया है। उनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं बहुमूल्य सलाह से यह शोध कार्य पूरा कर पाई हूँ। मैं आपके उपकार के लिए दिल से आभार प्रकट कर रही हूँ।

मेरे शोध कार्य के विषय-विशेषज्ञ कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के आचार्य डॉ. आर. शशिधरन के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ। उनके सुझावों से ही मेरा यह शोधकार्य सार्थक बन पाया है।

कोच्चिन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग की अध्यक्षा प्रो. (डॉ) के. वनजा जी के प्रति मैं विशेष आभारी हूँ। उनके बहुमूल्य सुझाव मेरे इस शोध कार्य की पूर्ति में सहायक रहे हैं। आपके प्रति मैं सदा कृतज्ञ हूँ।

विभाग के अन्य गुरुजनों के प्रति भी पूरे दिल से अपना आभार व्यक्त करती हूँ।

मेरे इस शोध कार्य की पूर्ति में विभाग के और विश्वविद्यालय के पुस्तकालय तथा वहाँ के कर्मचारी सहायक रहे। उनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ।

मैं डॉ.अनीश शंकर पी.एस और अन्य मित्रों विशेष रूप से संगीता नायर के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने मेरे शोध कार्य को पूरा करने में मेरा साथ दिया है।

मैं अपने माँ-बाप तथा भैया-भाभी के स्नेह के सामने नतमस्तक हूँ। यह शोध कार्य उनके आशीर्वाद एवं प्रार्थना का फल है। यह शोध प्रबंध उनको तथा मेरे पूज्य गुरुवर डॉ. षण्मुखन जी (दिवंगत) को समर्पित करती हूँ।

मैं यह शोध प्रबंध विनम्रता के साथ विद्वानों के सामने प्रस्तुत कर रही हूँ। इसकी कमियों एवं गलतियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

सविनय,

हिन्दी विभाग

के.लेखा

कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय
कोच्चि -682022